भारत का उत्थान होगा, मानव इच्छाओं से नहीं अपितु आत्मीय शक्तियों से, विनाशकारी ध्वजा से नहीं अपितु शांति और स्नेह की पताका के साथ अर्थात् संन्यासियों की त्यागपूर्ण वेशभूषा से, संपदा–शक्ति से नहीं अपितु भिक्षा–पात्र में निहित शक्ति के द्वारा..... लेकिन मैं अपने समक्ष उपस्थित जीवनधारा में स्पष्ट देख रहा हूँ कि चिरन्तन भारत माता एक बार फिर जाग्रत हो चुकी है, अपने सिंहासन पर विराजमान, पुनयौवन से भरपूर पहले से अधिक महिमापूर्ण स्वरूप में। आओ हम सब मिलकर शांति और मंगलकामना के संदेश द्वारा अपनी भारतमाता को सम्पूर्ण विश्व पटल पर प्रस्थापित करें।

- स्वामी विवेकानन्द

आत्मीय शक्ति, स्नेह व शांति सामाजिक सदभाव से ही आ सकती है।

प्राक्कथन

भारत माता को पुनः वैभव शिखर पर ले जाना, विश्व गुरू के पद पर अधिष्ठित करना, इसी यज्ञ में हम सब लगे हुए है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु स्वाभिमानी, स्वावलंबी, संस्कारित, समरस एवं संगठित समाज एक आवश्यक तत्व है। इस साध्य को प्राप्त करने हेतु सबसे उत्तम साधन है "सामाजिक सद्भाव"। अतः हिन्दू समाज में सामाजिक सद्भाव का निर्माण हो इस कार्य में हम सबको लगना है।

परम पूज्य गुरूजी के जन्म शताब्दी वर्ष में समाज जागरण के तीन कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम सामाजिक सद्भाव बैठकों का आयोजन किया गया था। अनुवर्तन के रूप में समय–समय पर खण्ड, जिला स्तर पर बैठको का आयोजन हम करते आये है परन्तु कुछ कमियों के कारण ये बैठके न्यूनाधिक प्रभावी रही।

कुछ समय पूर्व यह कार्य परिणाम कारक हो अतः पूर्व के अनुभवों को लेकर अखिल भारतीय बैठक वृन्दावन में सम्पन्न हुयी थी। जिसमें कार्य का स्वरूप कैसा हो, सांगठनिक रचना कैसी हो, बैठकों का आयोजन किस प्रकार हो, कार्यकर्ताओं हेतु क्या करणीय है क्या अकरणीय है आदि–आदि बातों पर विस्तार से चर्चा हुयी थी।

इन्हीं सब बातों पर विचार करते हुए मेरे मन में आया कि क्यों न इसे पुस्तक रूप में कार्यकर्ताओं के बीच में उतारा जाये ताकि कार्यकर्ताओं के सामने समान रूप से सभी बिन्दु व उनका भाव प्रकट हो सके। यह एक लघु प्रयास है।

इस लेखन प्रकाशन में मुझे जिन भी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, शुभेषियों, स्वजनों का सहयोग मिला है, तथा जिनके सहयोग के बिना कार्य को अक्षर रूप में लाना संभव नहीं था, सबके प्रति हृदय के अन्तरंग गहराईयों से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

– डॉ. ललित शर्मा

।। श्री ।।

सामाजिक सद्भाव

सामाजिक सद्भाव क्या है ?

हमारे देश में जाति–उपजाति की संख्या लगभग 6000 है। इनमें भेदभाव स्पर्श्य–अस्पर्श्य का ही नहीं है वरन् इनमें कुछ अपने को छोटा व साामने वाले को बड़ा तथा इसका उल्टा भी अपने को बड़ा व सामने वाले को छोटा मानते है।

पूजा पद्धति व कर्म काण्डों में भिन्नता के कारण भी भिन्नता बढ़ती ही गयी। औद्योगिकरण व आधुनिक जीवन शैली के बाद भी कहीं न कहीं एकता का भाव विद्यमान रहा है। इस कारण वर्तमान में भी सामाजिक सद्भाव न्यूनाधिक प्रदर्शित होता रहता है, सम्पूर्ण समाप्त नहीं हुआ है।

पश्चिम के चिन्तन में शरीर,मन, बुद्धि तक ही पहुंच है। जो सब मनुष्यों में अलग–अलग है। इनमें से एक भी मनुष्य को जोड़ने का माध्यम नहीं है। अतः परिणाम क्या हुआ ? प्रतिस्पर्धात्मक सभ्यता। हिन्दू चिन्तन में शरीर, मन, बुद्धि से भी उपर एक तत्व है जिसे कहते है आत्म तत्व जो निराधार, निर्विकार, निरहंकार, अनादि, अनन्त जड़चेतन सब में है। आत्म–तत्व सच्चिदानंद रूप में है। हिन्दू समाज में श्रेष्ठतम सिद्धान्त, दार्शनिक सिद्धान्त होने के बावजूद काल प्रवाह में अनेक शिथिलताए–कुरीतियां समाज जीवन में घर कर गई जिसके कारण हमारा देश शत्रुओं से परास्त हुआ, उनके दासत्व में रहा। परिणाम यह हुआ पहले जो जाति व्यवस्था कर्म आधारित थी वह जन्म आधारित होती गयी। परिणाम जाति के आधार पर हिन्दू व हिन्दू के बीच भेद–भाव एवं अस्पृश्यता। हर जाति में हिन्दू समाज का अंग होने का भाव तो है परन्तु अंगागी भाव का लोप हो गया। परिणाम जातियों (समाज) में आपस में कटुता बढ़ती गयी। अपनी ही जाति के उत्थान का कार्य तो जोर–शोर से करने लगे परन्तु दूसरी जाति की लाईन से अपनी लाइन बड़ी बनाकर नहीं उनकी लाईन छोटी करके। कुल मिलाकर हिन्दू समाज के सभी घटकों (जातियों) में सहयोग, सद्भाव के स्थान पर कटुता, अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा ने जगह बना ली।

जब सारा विश्व शांति के लिए भारत की ओर देख रहा है तो हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हिन्दू समाज को इन सब से मुक्त कर समरस, सजग, सबल, समृद्ध, स्वावलम्बी समाज बनाना है, और यह कार्य सामाजिक सद्भाव से

ही सम्भव है।

एक बात समान है – समस्या है, बैठते है, समाधान निकलता है। इसका अर्थ है कि कोई ऐसी बात मौलिक है जो आपस में जोड़ती है, चाहे वह समान विचार हो, समान तत्व हो, समान दर्शन हो।

आसाम का उदाहरण – सभी जन जाति/समाज की बैठक में लगभग 60 समाजों के प्रतिनिधि थे। पहले कहते थे कि हम हिन्दू नहीं है। बैठक में विषय रखा। मौलिक बात बताई, बाद में सबने कहा यदि ऐसा है तो हम सब हिन्दू है। अर्थात् पहले उनको वह मौलिक बात किसी ने बताई ही नहीं।

ऋगवेद का मंत्र है – ''संगच्छद्वम समवध्द्वम् समवो मनानसि जानताम्

साथ बैठते है तो एक दूसरे के मन को जानकर बातचीत करते है, चर्चा करते है, सफलता प्राप्त होती है।

संघ प्रतिज्ञा में भी ''पवित्र हिन्दू समाज'' शब्द आया है क्योंकि हिन्दू समाज ही हजारों वर्षों से ईश्वरीय तत्व को लेकर चलता है, यह सनातन दृष्टि है, ईश्वर का अंश है, एकात्म का दर्शन करता है, अतः हिन्दू पवित्र है। परिस्थिति के कारण निर्धनता, गंदगी, नशा प्रवृति, अशिक्षा आदि की स्थिति आती है। जब बैठते है तो सब मानते है

''सर्वे भवन्तु सुखिनः .....

सबमें ईश्वारंश है अतः कोई छोटा नहीं हो सकता है।

वेदों में कहा है विभिन्न कार्य करने वाले है सबमें शिव के दर्शन करो। यजुर्वेद में लिखा है –

नमस्तक्षभ्यो रथकारे भ्यश्चवो नमो नमः

कुलालेभ्य कर्मा रे भ्यश्चवो नमो नमः

लिखा देभ्यः पुंजिश्ठे भ्यश्चवो नमो नमः

श्वनिभ्यो मृगयु भ्यश्चवो नमो नमः

अर्थात् काष्ठ कला के विशेषज्ञ को नमस्कार, रथ आदि वाहनों के निर्माता को नमस्कार, मिट्टी के कारीगर को नमस्कार, लोहे के कारीगर को नमस्कार, वनचर को नमस्कार, श्वान को नमस्कार, विद्या में निपुण अर्थात् विद्वान को नमस्कार, व्याध को नमस्कार, सबको नमस्कार। इसका अर्थ है ऋषि

ने किसी में भेद नहीं समझा। परन्तु ऋषि जानते है कि भेदभाव हो सकता है अतः स्पष्ट कहा –

ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास, उद्भिदोऽ मध्यमासो महसा वि वा वृधुः

(ऋग्वेद 5.59.6)

हममें कोई श्रेष्ठ नहीं, कोई कनिष्ठ भी नहीं और कोई मध्यम श्रेणी का भी नहीं। हम सभी समान है तथा मिलकर अपनी उन्नति करते है। ऋषि ने एक कदम आगे और कहा है –

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते संभ्रातरो वा वृधुः सौभगाय

हमसे न कोई बड़ा है और न कोई छोटा ऐसे में हम सभी भाई के समान रहते है और सौभाग्य प्राप्ति के लिए एक दूसरे को आगे बढ़ाते है।

यह भी सत्य है कि विकृति आयी है। वंश के वंश में परिवर्तन आया है। कभी शासक वंश रहे "शाक्य वंश" मौर्य वंश आज पिछड़ों में गिने जाते है।

सामाजिक समता, समानता, समरसता

सामाजिक सद्भाव को समझने से पहले सामाजिक समता, सामाजिक समानता, सामाजिक समरसता को ध्यान में रखना आवश्यक हो जाता है। इनमें आपस में भ्रम नहीं होना चाहिए।

सामाजिक समता –

कम्युनिस्ट भी समता की बात करते है। वे समता के बारे में आर्थिक दृष्टि से ही सोचते है। इसलिए वे आर्थिक संसाधनों का समान वितरण चाहते है, परन्तु समता कोई आर्थिक प्रारब्ध..... नहीं। अतः जिनके हाथ आर्थिक अधिकार आते है वे ही शोषक बन जाते है और शेष शोषित। परिणाम समता ही समाज से गायब हो जाती है तथा समाज में ऊंच नीच का भाव बहुत कुछ पैसे के आधार पर तय हो जाता है। हिन्दू दृष्टिकोण के अनुसार परिवार व शरीर की प्रकृति के आधार पर समता का भाव है। आयु के हिसाब से छोटा बड़ा, आर्थिक आधार, प्रतिभा व बुद्धिमता के आधार पर भेद हो सकता है किन्तु इस कारण व्यवहार में, आपस में परस्पर प्रेम की दृष्टि से ऊंच नीच का भाव न हो यह हिन्दू समाज की दृष्टिकोण है।

गीता में कहा है :–

विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मण गवि हस्तिनि।
गुनि चैव श्वपाके च पण्डिता सम दर्शिनः।।

ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुता एवं चांडाल आदि को विद्वान लोग समा दृष्टि से देखते है। सम्पूर्ण समाज को भी समान दृष्टि से देखना, यही सामाजि समता है।

सामाजिक समानता –

किसी भी समाज, कोई भी जीवन, कैसी भी सृष्टि हो विविधता उसव विशेषता है। सृष्टि में कोई दो समान रचना मिलना लगभग असम्भव है पर विविधता में एकता का दर्शन करना यह हिन्दू दृष्टिकोण है। सबमें एक ही ईश्व का अंश है अतः ऊंच नीच का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। आर्थिव सामाजिक,राजनीतिक, सांस्कृतिक अर्थात् जीवन के सभी अंगोपांग में ह समानता की कल्पना करते है। समान आदर का भाव ही समानता है। हम संविधान के अनुसार सामाजिक समानता से तात्पर्य है कि भारत के सभी लो को अपने विकास के समान अवसर मिले। हिन्दू दृष्टिकोण के अतिरिक्त जा सामाजिक समता एक सैद्धान्तिक पक्ष है वही सामाजिक समानता क्रियात्मक प है तथा हिन्दू दृष्टिकोण के अनुसार सामाजिक समता व सामाजिक समान दोनों ही उच्च सिद्धान्त के साथ–साथ व्यावहारिक पक्ष है।

जब भारत विश्व गुरू कहलाता था उस समय भी सामाजिक समान का पक्ष सर्वोच्च स्तर पर था। सामाजिक समानता से ही सामाजिक समरसता सामाजिक सद्भाव दोनों ही प्रतिस्थापित होने वाले है।

सामाजिक समरसता –

समाज का कर्तव्य है शासन, न्यायपालिका, समाज में समन्वय। इसी समरसता की संकल्पना है। सामाजिक समरसता की कल्पना से ही एक दूसरे बंधुत्व के भाव का निर्माण होता है।

– सामाजिक समरसता की अवधारणा जाति निरपेक्ष समाज निर्मित कर वाली है।

– सामाजिक समरसता "भारतीय सांस्कृतिक एकात्मता" का साध्य कर वाली अवधारणा है।

- सामाजिक समरसता के अनेक अर्थ है – समाज में पिछड़े बन्धुओं की धर्म भावना से समरस होकर, उनको मन से अपनाकर विचार से स्वीकृत करना, व्यवहार में खुशी से अभिव्यक्त करना। उससे विश्वास बढ़ता है। विश्वास समरसता की पहली सीढ़ी है।
- सामाजिक समरसता साधना है। सिद्धि हेतु यम–नियम की पालना करना आवश्यक है। जिस क्षेत्र में काम करना उस क्षेत्र का ज्ञान होना प्राप्त करना आवश्यक है।
- सामाजिक समरसता अनुभव करने का विषय है। सामाजिक समरसता एक वैचारिक आन्दोलन है। पहले विचार बनता है। बाद में कृति होती है। कृति से अनुभव आता है।
- सामाजिक समरसता यानि स्वीकार और समन्वय ।
- सामाजिक समरसता यानि भारतीय संस्कृति का आदि तत्व।
- सामाजिक समरसता की संकल्पना हृदय से संबंध रखती है अर्थात् अपने मन से श्रेष्ठ भाव के साथ कृति/व्यवहार सामाजिक समरसता व्यावहारिक धरातल का विषय है अर्थात् स्वयंसेवक के लिये सामाजिक समरसता, आचरण का विषय है – भाषण का नहीं, कार्यक्रम का नहीं। स्वयं से प्रारम्भ करने का विषय है।
- सामाजिक समरसता का अर्थ है हिन्दू समाज से अस्पृश्यता के भाव का उन्मुलन। बाला साहब देवरसजी ने कहा था "अस्पृश्यता यदि पाप नहीं है तो दुनिया में कोई पाप नहीं है।" अर्थात् अस्पृश्यता सबसे बड़ा पाप है।
- सामाजिक समरसता सामाजिक सद्भाव का एक विषय/केन्द्रीय विषय हो सकता है परन्तु सामाजिक सद्भाव एक वृहद विषय।

सामाजिक सदभाव –

- सामाजिक सद्भाव की अवधारणा हिन्दू समाज के अंगागी भाव का निरूपण है। सांस्कृतिक एकात्मता साध्य करने वाली अवधारणा का एक साधन है।
- सामाजिक सद्भाव – हिन्दू समाज के विभिन्न घटकों (जातियों) में आपसी सामन्जस्य, परस्पर सहयोग का भाव है।

- सामाजिक सद्भाव यानि अपने–अपने समाज में राष्ट्रीय भाव का निर्माण एवं एकीकृत व संगठित हिन्दू समाज के अंगागी भाव का निर्माण।
- सामाजिक सद्भाव अर्थात् अपने–अपने समाज में कुरीतियों के उन्मुलन, जीवन मूल्यों एवं संस्कारों के माध्यम से विकास के साथ अन्य समाज के विकास में सहयोग।
- सामाजिक सद्भाव अर्थात् समान कुरीतियां, कमियां, समस्यायें सब समाज के बन्धु मिलकर दूर करना।
- सामाजिक सद्भाव हिन्दू समाज का साध्य है जिसे प्राप्त करने में सामाजिक समरसता एक साधन है।
- सामाजिक सद्भाव एक सम्पूर्ण आन्दोलन/समग्र क्रान्ति है।
- सामाजिक सद्भाव यानि भारतीय संस्कृति के आदि तत्व (एकत्व का भाव, विविधता में एकता के दर्शन) का प्रगटीकरण है।
- सामाजिक सद्भाव की संकल्पना मन और बुद्धि दोनों से सम्बन्ध रखती है।
- सामाजिक सद्भाव भी सामाजिक समरसता की तरह व्यावहारिक धरातल का विषय है तथा साथ ही सबके स्वीकार्यता का भी विषय है।
- सामाजिक सद्भाव का अर्थ है जाति भाव से की गयी यात्रा का आरम्भ हिन्दू भाव पर पहुंच कर समाप्त हो।
- सामाजिक सद्भाव अर्थात् एक जाति के प्रति दूसरी जाति का प्रेम, श्रद्धा, आदर आदि का भाव हो और यह भाव स्वाभाविक हो कृत्रिम अथवा बनावटी न हो।
- सामाजिक सद्भाव अर्थात् सम्पूर्ण हिन्दू समाज। जाति बिरादरी के बीच समझ (understanding) है।
- सामाजिक सद्भाव सभी विषयों का मूल है, सभी सामाजिक समस्याओं का हल सामाजिक सद्भाव है।

उदाहरणार्थ – आरक्षण का हल तर्क, कानून व्यवस्था से नहीं हो सकता। इसका हल सामाजिक सद्भाव से ही सम्भव है। आरक्षित वर्ग कहे कि

उन्हें जितना आवश्यक है उतना आरक्षण लेंगे। अनारक्षित वर्ग कहे कि हजारों वर्षों तक उन्होंने सहा अब 100 वर्ष हम भी सह लेंगे।

– विभिन्न घटकों में बैर के अभाव को सामाजिक सद्भाव नहीं कहा जा सकता है अपितु सामाजिक सद्भाव न होने पर घटकों में बैर होता है।

सामाजिक सद्भाव का केन्द्रीय विषय –

सामाजिक सद्भाव का प्रमुख कार्य core issue केन्द्रीय विषय क्या हो सकते है? समाज के प्रमुखों में निम्न बातों का निर्माण –

1. सभी अपनी–अपनी जाति के नहीं हिन्दू समाज के घटक है। हिन्दू समाज की समस्या मेरी समस्या है। ऐसी वैचारिक समझ बने एवं व्यवहार में परिलक्षित हो।
2. बुराइयों का निर्वाण।
3. common राष्ट्र भाव जागरण
4. समाज के तोड़ने के कार्य के विरूद्ध कार्य।
5. आरक्षण के कारण सामाजिक टूटन के विरूद्ध कार्य भी core issue है।

core issue को समझने हेतु निम्न बातें आवश्यक है :–

1. सद्भावना हेतु संवेदना आवश्यक है,
2. जाति चैतन्य – अपने जाति की विशेषताएं, महापुरूषों की कृति, कमियों आदि के प्रति जानकारी एवं सजगता,
3. भारत के प्रति श्रद्धा,
4. हिन्दू समाज के अंगागी भाव का होना,
5. हिन्दू के कारण हमारी अस्मिता को खतरा, इस भ्रम को समाप्त करना। वास्तव में तो सभी जातियों की अस्मिता (identity) बची है तो हिन्दू के कारण। यदि हिन्दू नहीं हो तो अस्मिता समाप्त होती है। मिजोरम का उदाहरण हमारे सामने है जहां स्थानीय जातियों की लगभग सम्पूर्ण अस्मिता समाप्त होकर "ईसाईकरण" हो गया।

सामाजिक सद्भाव निर्माण कौन करेगा ?

सामाजिक सद्भाव निर्माण हेतु दो बातें आवश्यक –

1. समाजों में सज्जन लोगों का नेतृत्व हो तथा वे परस्पर पूरक बने।
2. हिन्दू समाज के एक वर्ग की समस्या सबकी समस्या अतः सब मिलकर हल करें, इस भाव को रखने वाले लोग सहयोगी बनें।

80–90 प्रतिशत समस्याएं स्थानीय होती है अतः मिलकर समाधान निकालना चाहिए। आज भी दुर्भाव वाले अधिक नहीं है फिर भी सामाजिक सद्भाव की कृति दिखायी नहीं देती, क्योंकि दुर्भाव वाले सक्रिय अधिक दिखायी देते है।

सामाजिक सद्भाव बिना आपस में मिले सम्भव नहीं।

हमारे सन्तों ने कहा है –

"हिन्दवः सोदरा सर्वे न हिन्दु पतितो भवेत्
मम दीक्षा हिन्दू रक्षा मम मंत्रः समानता।

अतः सामाजिक सद्भाव का कार्य भी हमारे साधु,संत, समाज/जाति के प्रमुखों द्वारा किये जाने वाला कार्य है। स्वयंसेवकों का कार्य ऐसा वातावरण तैयार करने का है।

सामाजिक सद्भाव निर्माण कैसे होगा ?

जैसा पहले बताया है कि समस्या है, बैठते है, समाधान निकलता है। समस्या यह है कि भारत में वर्तमान में सामाजिक सदभाव की कमी है। अतः साथ बैठना है, किनको साथ बैठना है तो विभिन्न जाति बिरादरी के प्रमुखों जिनकी सूची बनी है, उनको साथ बैठना है। समाधान क्या होगा – सामाजिक सद्भाव में वृद्धि होगी, सबल, सशक्त, सुयोग्य, समरस समाज होगा भारत माता पुनः विश्व गुरू बनेगी, यह निश्चित है। अतः साथ बैठने हेतु सामाजिक सद्भाव बैठक महत्वपूर्ण कड़ी है।

उपरोक्त बताये गये सज्जन शक्ति, सहयोगी भाव के लोग, विभिन्न समाजों के प्रमुख लोग, समाज / संस्थाओं के नेतृत्वकर्ता, साधु–संत आदि के बार–बार मिलने पर तथा आपस में मिलकर चर्चा, संवाद, वार्ता, मार्गदर्शन होगा तब धीरे–धीरे सामाजिक सद्भाव का निर्माण होगा अथवा इस कार्य को गति मिलेगी। यह सब कार्य सामाजिक सद्भाव बैठकों से संभव है।

सामाजिक सद्भाव बैठको में सामाजिक सद्भाव हेतु मिलने का स्थान वातावरण, बातचीत, विधि आदि की जानकारी मिल सकती है।

यदि जाति प्रमुख मिलकर करें तो सब कार्य हो सकते है, यह हमारा विश्वास है। अतः जाति प्रमुखों पर ध्यान देना अर्थात् सामाजिक सद्भाव बैठकों में जिनको बुलाना उनकी खण्ड स्तर/जिला स्तर/प्रान्त स्तर पर सूची बनाना। सूची निम्न आधार को ध्यान में रखकर बनाना ठीक रहेगा :–

1. **निर्वाचित (Elected)** – अपने–अपने समाज में विभिन्न पदों पर निर्वाचित सदस्यों में जो समाज में प्रभावी हो, सक्रिय हो, ऐसे बन्धु,
2. **चयनित (Selected)** – समाज में वर्तमान में कोई पदाधिकारी न हो परन्तु पूर्व में रहा हो, प्रभावी हो, सक्रिय हो, ऐसे बन्धुगण,
3. **स्वीकृत (Accepted)** – कई बार समाज में किसी पद पर तो नहीं रहते परन्तु अपने समाज में स्वीकार्य व्यक्तित्व होते है, निर्वाचित पदाधिकारी भी उनकी सलाह से काम करते है। समाज में निर्वाचित पदाधिकारीयों से भी अधिक प्रतिष्ठित रहते है, प्रभावी रहते है, ऐसे बन्धुगण।
4. **लक्षित (Targated)** – कुछ लोग दबंगता के कारण अथवा विशेष व्यक्तित्व के कारण अथवा अच्छे कार्यों के कारण अन्य समाजों में सर्व स्वीकार्य बन्धु होते है, ऐसे बन्धुगण।

उपरोक्त प्रकार के अतिरिक्त भी सूची में अन्य नाम हो सकते है, क्योंकि जाति बिरादरी के अतिरिक्त भी हमारे यहां हिन्दू समाज की रचनाएं है। जैसे

- साधु–संत
- मठ, मन्दिर, आश्रम के प्रमुख
- नव सम्प्रदाय/पंथ जैसे – माता अमृतामयी, श्री श्री रविशंकर जी, सत्य सार्यी, गायत्री परिवार आदि के प्रमुख अनुयायी।
- धार्मिक ट्रस्ट, आयोजन समितियों के प्रमुख/संचालक

सूची बनाते समय यह भी ध्यान रहे कि –

- सूची में जनजाति लोगों के नाम भी हो,
- सूची में अपने को हिन्दू न मानने वाले हिन्दुओं के भी नाम हो,
- सूची में महिलाओं के भी नाम हो (कम से कम जिला स्तर की सूची में)
- सूची में ऐसे लोगों का भी नाम हो जिनका समाज में स्थान है,

- जैन साधु, गुरू ग्रंथी, बौद्ध भिक्षु आदि के भी नाम सूची में हो,
- सामाजिक संस्थाओं के संचालकों का नाम भी सूची में हो,

सूची बनाते समय सावधानियाँ –

- राजनीतिक व्यक्तियों को सूची में नहीं रखना चाहिए,
- प्रान्त स्तर की सूची बनाना ताकि बड़े स्तर के लोग बचे नहीं,
- सूची के नाम लिखते समय व्यक्ति की समझदारी को भी ध्यान में रखना चाहिए।
- सूची में नाम जोड़ने से पहले टोली के कार्यकर्ता से व्यक्तिगत बातचीत करना ठीक रहता है ताकि व्यक्ति की समझदारी पर भी विचार किया जा सकता है,
- सूची में सभी जातियों का प्रतिनिधित्व हो।

टोली का निर्माण व प्रशिक्षण

सामाजिक सद्भाव के परिणाम हो इस हेतु आवश्यक है कि ऐसे सूचीबद्ध लोगो की नियमित अन्तराल पर बार–बार बैठके होती रहे। लगातार व लम्बे समय तक ऐसी बैठके होती रहे इस हेतु अलग–अलग स्तर पर टोली का निर्माण हो तथा इस टोली के द्वारा / माध्यम से सामाजिक सद्भाव बैठको का आयोजन हो।

ऐसी बैठकों की योजना–रचना करने हेतु खण्ड स्तर, जिला स्तर, प्रान्त स्तर पर टोली का निर्माण करना आवश्यक लगता है।

खण्ड स्तर पर 8–10 कार्यकर्ता, जिला स्तर पर 10–15 कार्यकर्ता व प्रान्त स्तर पर 5–7 कार्यकर्ता की टोली बनाना अपेक्षित है। टोली के सदस्यों में निम्न गुण विद्यमान हो तो उचित रहेगा :–

1. जाति समूह/वर्ग प्रमुखों से सम्पर्क तथा बातचीत करने की कुशलता, स्वभाव व रूचि रखने वाला कार्यकर्ता हो।
2. सर्वेक्षण करने व जाति/समाज का अध्ययन करने की रूचि रखने वाला भी हो।
3. वर्तमान में सक्रिय भले ही न हो परन्तु ऐसे पुराने योग्य कार्यकर्ता भी हो

सकते है।

4. जागरण श्रेणी एवं गतिविधि के कार्यकर्ता भी हो सकते है। टोली प्रमुख भी इन कार्यकर्ता में से हो सकते है।

5. समाज बंधुओं की सूची बढ़ने के साथ टोली कार्यकर्ता की संख्या भी बढ़ा सकते है।

6. कालान्तर में सूची के लोगों में योग्यता आने पर टोली सदस्य के रूप में भी चयन किया जा सकता है।

7. टोली कार्यकर्ताओं को भी नियमित अन्तराल पर बैठक बुलाना, कम से कम दो माह में एक बार बैठक बुलाना उचित होगा।

8. टोली के कार्यकर्ताओं में क्षमता व कुशलता, योग्यता वृद्धि हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन करना लाभप्रद रहेगा।

9. टोली की बैठक में कार्यकर्ता का मानस इस कार्य हेतु बनाना।

10. जातियों के महापुरूषों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

11. कार्यकर्ता अपने आप में सुधार कर कार्य की गति बढ़ाने में सहयोग कर सकता है। इस हेतु ऊपर स्तर पर व नीचे स्तर पर प्रबोधन आवश्यक है। ऊपर स्तर पर परिष्कार, संबोधन व सहयोग तथा नीचे के स्तर पर परिष्कार, संबोधन सहयेाग, समन्वय व संघ कार्य के माध्यम से कार्यकर्ता की समझ बढ़ सकती है एवं सुधार संभव है।

12. जिला/प्रान्त स्तर के कार्यकर्ता प्रेरणा वाले बने तथा खण्ड स्तर के लोग सहायता वाले बने।

टोली के कार्य -

खण्ड/जिला स्तर पर सामाजिक सद्भाव बैठकें आयोजित करने, संचालित करने के अतिरिक्त भी टोली के कार्यकर्ताओं से निम्न कार्य अपेक्षित है :–

1. सामाजिक सद्भाव बैठक में आने वाले समाज बंधुओं की सूची बनाना। सूची बनाने की प्रक्रिया पूर्व में दी गयी है।

2. सूची के जाति प्रमुखों से उनके घर जाकर सम्पर्क करना। इस हेतु टोली कार्यकर्ता में से ही गट व्यवस्था की जा सकती है। बैठक से पूर्व

तथा दो बैठकों के बीच के समयान्तराल में सम्पर्क किया जाना चाहिए। व्यक्तिगत चर्चा में निम्न विषयों पर चर्चा की जानी उचित रहेगा।

- परिवार की व्यवस्था,
- घर की विशेषता
- स्वयं की जाति के लिए क्या–क्या कर रहे है।
- शेष समाज के प्रति दृष्टि क्या है?

3. सामाजिक सद्भाव बैठक में वातावरण बनाना।

4. अगली बैठक होने तक पिछली बैठक का अनुवर्तन (follow-up) करना।

5. प्रान्त टोली कार्यकर्ता अपने प्रान्त में जातियों के बारे में पुस्तक तैयार करना, ताकि उनके बारे में सही बातें जानकारी में आये। अपने–अपने क्षेत्र में जातियों के बारे में जानकारी रखना जैसे संख्या कितनी है, क्या–क्या सुविधाएं प्राप्त है, साक्षरता कितनी है, समस्याएं क्या–क्या है आदि।

6. टोली के कार्यकर्ताओं को स्पष्ट रहे कि सामाजिक सद्भाव यह कोई विविध संगठन नहीं कोई गतिविधि भी नहीं, यह अपना काम है। जागरण श्रेणी का एक प्रकल्प/कार्य माना जा सकता है।

7. 2–3 समझदार कार्यकर्ता टोली के केन्द्र में रहे एवं बाकी टोली धीरे–धीरे सूची अनुसार बढ़ती भी रहे।

8. जाति प्रमुखों की सूची में से भी क्या कोई कार्यकर्ता बन सकता है, यह ध्यान रखना भी टोली कार्यकर्ता का काम है।

9. टोली के अन्य कार्यकर्ता की भी समझ धीरे–धीरे बढ़ती रहे।

10. कार्यकर्ता अपने आप में भी सुधार कर कार्य की गति बढ़ा सकता है।

11. सामाजिक सद्भाव बैठकों में आने वाले लोगों की निरन्तरता बढ़े, यह भी टोली कार्यकर्ता का कार्य है।

12. लोगों को अपना बनाना, अपने जैसा नहीं बनाना। यह भी टोली कार्यकर्ता का काम है।

सामाजिक सद्भाव बैठकों का समयान्तराल –

वर्ष 2006 से संघ विभिन्न स्तरों पर सामाजिक सद्भाव बैठकें करता आया है। पुराना अनुभव कहता है कि दो बैठकों के मध्य लम्बा समयान्तराल व व्यवस्थित बैठकें न होने से वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे है। अतः प्रभावी कार्य हो एवं कार्य की गति बढ़े, तो दो बैठकों के बीच का समयान्तराल अपने–अपने क्षेत्र की परिस्थिति, योग्य कार्यकर्ताओं की संख्या आदि को ध्यान में रखकर तय किया जा सकता है। फिर भी अपने प्रान्त में कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा कर विचार किया है कि –

- महानगर व नगर स्तर पर दो माह में एक बार,
- खण्ड स्तर पर तीन माह में एक बार,
- कमजोर खण्ड में चार माह में एक बार।

उक्त समयान्तराल रखने पर सूची के लोगों से सम्पर्क, अनुवर्तन आदि भी पर्याप्त समय रहेगा तथा बहुत अधिक समय न होने से कार्य की गति भी बढ़ेगी।

बैठक की पूर्व तैयारी –

- टोली के कार्यकर्ताओं की बैठक करना, अपने स्तर हेतु निश्चित किये कार्यकर्ता से सम्पर्क कर बैठक की तिथि तय करना, क्योंकि एक स्थान पर बैठक लेने वाले कार्यकर्ता निश्चित रहेंगे ताकि पिछली बैठकों में क्या बातचीत हुयी, क्या निर्णय हुए, भविष्य की क्या कार्य योजना बनी थी आदि बातों का ध्यान रहे तथा प्रभावी परिणाम प्राप्त हो सके।
- सूची के बन्धुओं को टोली के कार्यकर्ता बैठक का निमन्त्रण व्यक्तिगत रूप से घर जाकर देना प्रभावी रहेगा। इस हेतु गट व्यवस्था बनाकर सूची के बंधुओं के नाम टोली के कार्यकर्ताओं को बांटना चाहिए।
- निमंत्रण के समय स्थान, समय, समयावधि आदि की पूर्ण सूचना देनी चाहिए।
- बैठक में आने वाले लोगों के स्वागत (तिलक आदि लगाकर) की व्यवस्था करनी चाहिए।
- बैठक का संचालन कौन करेगा पूर्व में तय करना चाहिए।

- माता–बहिनों की बैठने की व्यवस्था अलग से करनी चाहिए। पर्याप्त संख्या हो तो माता–बहिनों की बैठक ही अलग से की जा सकती है।
- इसी प्रकार संतों की भी बैठने की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। पर्याप्त संख्या हो तो साधु–संतों की अलग से बैठक की जा सकती है।
- बैठक स्थल पर भारत माता का चित्र हो सबके बैठने की समान व्यवस्था हो। सभी महापुरूषों के चित्र लगे हो, (यदि संभव हो तो) मात्र चयनित चित्र ही न हो।
- सर्वमान्य बन्धु हो तो ही बैठक में अध्यक्ष आदि बनाया जा सकता है। अन्यथा नहीं भी बनाए तो चलेगा।
- आवश्यक हो तो ही मंच की व्यवस्था करनी चाहिए। न भी करेंगे तो चलेगा।
- कोई पर्दा आदि हो तो 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' नाम नहीं हो, ध्यान रहे।
- संघ की आज्ञाओं का उच्चारण भी नहीं होना चाहिए।
- अन्त में संघ की प्रार्थना भी नहीं।

बैठक संचालन, चर्चा के विषय/बिन्दू –

- बैठक का संचालन करने वाला कार्यकर्ता पहले ही तय करना चाहिए।
- बैठक में परिचय का महत्व अत्यधिक है। अच्छा होगा टोली के कार्यकर्ता विस्तृत परिचय समाज बंधुओं का करवाए। परिचय में उनकी विशेषता बताना। उनके मन में गौरव उत्पन्न करना ऐसा करते समय यह भी ध्यान रहे कि दूसरे लोगो की भावनाओं को चोट न पहुँचे।
- बैठक के प्रारम्भ में भूमिका/विषय प्रतिपादन संचालन तथा बैठक लेने वाला निश्चित कार्यकर्ता करे। तत्पश्चात् जाति बिरादरी के प्रमुखों को बोलने का अवसर देना। कई बार उनसे बुलवाने हेतु बहुत आग्रह करना पड़ता, यह बात कार्यकर्ता को ध्यान में रहे।
- बैठक में कार्यकर्ता द्वारा कौन सी बात कौन कहेगा, कैसे कहेगा यह भी ध्यान रखना चाहिए।
- कभी–कभी समाज के दूसरे प्रबुद्ध लोगों को उद्बोधन का अवसर भी

देना चाहिये, दे सकते है।

- बैठक की कार्यवाही का रजिस्टर रखना व बैठक के मुख्य बिन्दुओं को नोट करना चाहिये।
- बैठक में नीचे दिये गये चर्चा के विषय/बिन्दु संकेत रूप में दिये गये है। अपने–अपने क्षेत्र की परिस्थिति, समस्या आदि के अनुरूप अन्य बिन्दु भी रख सकते है।
- जैसे गीत में छन्द अलग–अलग परन्तु ध्रुव पद एक इसी प्रकार कुछ विषय सब बैठकों में, कुछ विषय स्थिति अनुसार।
- विभिन्न वर्गों/व्यक्तियों/संस्थाओं द्वारा किये जाने वाले अच्छे कार्यों की जानकारी व उन पर चर्चा। ऐसे कार्यो के परिणामों पर भी चर्चा कर सकते है।
- देश, प्रान्त, जाति/वर्ग की समस्याओं पर विशेष चर्चा एवं उनके समाधान पर चर्चा।
- अपनी–अपनी जाति/वर्ग में किस बात पर विशेष जोर दिया जाता है इस पर चर्चा।
- अपनी–अपनी जाति के महापुरूषों द्वारा देश के लिये क्या–क्या किया, इस पर चर्चा, ताकि उनके प्रति दृढ़ गौरव भाव का निर्माण हो।
- भारत माता के प्रति श्रद्धा पैदा हो, इस हेतु भारत माता पूजन, भारत माता की आरती आदि कार्यक्रम करवाना।
- देश व्यापी विषयों पर चर्चा जैसे पर्यावरण, जल संरक्षण, कुटुम्ब प्रबोधन, हिन्दू परिवार कैसा हो, स्वच्छता आदि।
- बैठक के माध्यम से सामाजिक उत्थान पर चर्चा कर सकते है।
- हिन्दू समाज के अंगभूत घटक/अंगागी भाव के जागरण का विषय
- हिन्दू के कारण हमारी अस्मिता को खतरा, इस भ्रम को समाप्त करना
- हम विषयों को भावात्मक रूप से तो अच्छी प्रकार से रखते है, परन्तु वैचारिक प्रतिपादन विस्तृत रूप से रखने की तैयारी चाहिए।
- परिवार में राष्ट्रीय भाव जागरण हेतु राष्ट्रीय चर्चा।
- जनसंख्या असंतुलन का विषय।
- धर्म सत्ता व समाज सत्ता में सहयोग व संतुलन किस प्रकार रह सकता है।
- कन्या भ्रूण/कन्या शिशु हत्या।
- स्वदेशी संकल्पना, स्वभाषा, स्व–जागरण।
- जाति इतिहास लेखन का विषय।
- वृहद् हिन्दू सम्मेलन आयोजन पर चर्चा
- महापुरूषों की जयन्तियाँ व उत्सव सभी जाति/वर्ग द्वारा सामूहिक मनाने का कार्य।
- समाज जागरण हेतु प्रबोधन (समाज का) की व्यवस्था किस प्रकार हो सकती है।
- हिन्दु हितों के विरोध में सामूहिक विरोध की योजना रचना किस प्रकार हो सकती है।
- दूसरे समाज/वर्ग के धार्मिक आयोजनों में सबको निमंत्रण देने का कार्य।
- विविधता बनाए रखते हुए एकता का प्रगटीकरण समाज जीवन में किस प्रकार हो सकता है।
- बड़ी व राष्ट्रीय समस्याओं के बारे में बताना। उदाहरण – पुरी के शंकराचार्य को धर्मान्तरण की समस्या बताई तो उनको दुखद आश्चर्य हुआ। अब वे स्वयं इस क्षेत्र में काम कर रहे है।
- हमारा कार्य विषयों के प्रतिपादन का है। प्रयोग गतिविधियों के माध्यम से किये जाने चाहिए। ऐसे प्रयोगों की जानकारी बैठक में जाति प्रमुखों को देना। जाति प्रमुखों के माध्यम से अपने–अपने समाज में प्रयोगों को आगे बढ़ाना। उदाहरण – अरूणाचल प्रदेश में जहाँ ईसाईकरण तेज गति से बढ़ रहा था, वहाँ स्वदेशी विश्वास और सांस्कृतिक सोसायटी Indegeneous Faith and Cultural Society of Arunachal Pradesh के द्वारा स्वदेशी जन जातियों के पारम्परिक रीति–रिवाजों और धर्मों को सफलता पूर्वक संरक्षित और बनाये रखा है।
- सामाजिक सद्भावना हेतु संवेदना आवश्यक है। संवेदना जागरण के

प्रयोगों पर चर्चा हो सकती है।

अपने–अपने जाति के महापुरूषों, विशेषताओं आदि अध्ययन के माध्यम जाति चैतन्य का निर्माण करने का विषय हो सकता है।

सामाजिक सद्भाव के core issue जिसका उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है पर चर्चा यथा common बुराइयों का निर्वाण, राष्ट्र भाव जागरण, समाज तोड़ने के विरूद्ध कार्य हिन्दू समाज की समस्या मेरी समस्या, वैचारिक समझ व व्यवहार।

घर वापसी, धर्मान्तरण व विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से समाज परिवर्तन का विषय।

सामाजिक समरसता का विषय व इससे संबंधित होने वाले प्रयोगों पर चर्चा।

अनुसूचित जाति के व पिछड़े वर्ग के साधु है, यह कैसे हो सकता है। साधु संत सम्पूर्ण हिन्दू समाज के है, हमारे सम्प्रदाय पाश्चात्य के religion की तरह नहीं है। हमारे सम्प्रदाय मौलिक बिन्दुओं पर एक। तो चर्चा कहाँ, चर्चा आत्मा परमात्मा, द्वैत, अद्वैत, शुद्धाद्वैत आदि–आदि पर हमारी विविधता, पूजा पद्धति, कर्मकाण्ड में है, परन्तु मौलिक बिन्दु एक–सबमें एक ही ईश्वर का अंश है।

लिंगानुपात, महिला सशक्तिकरण, महिला सम्मान किस प्रकार हो। शास्त्रों में कहा है, घर में वधु महारानी की तरह प्रवेश करती है।

हिन्दू परिवार कैसा हो–बात कंजूसी, कृपणता की नहीं बात संयम की है। त्याग की वृति केवल हिन्दू ही रख सकता है।

सम्पदा का अर्जन, परन्तु अपने पर खर्च यह हिन्दू दर्शन नहीं हो सकता है।

पराधीनता में हमारे लोग विधर्मी हो गये। उनको वापस लाना। अभी सबसे अनुकूल परिस्थिति है। हिन्दू का दरवाजा बन्द है। पहले सुरक्षा के कारण था, ठीक था। परन्तु अब दरवाजा खोलना होगा।

कभी–कभी कठोरता अच्छी होती है, कभी कभी कठोरता घातक होती है। बाजीराव पेशवा व कालाचन्द राय से बना काला पहाड़। कालाचन्द राय को जाति बहिष्कृत न किया होता तो बंगाल हिन्दू बहुल होता,

बंगला देश भी न बनता, शायद पाकिस्तान भी नहीं।

– हमें समझना होगा मौलिक क्या है, विकृति क्या है। विकृति को विकृति मानकर मौलिक दर्शन/मुद्दो पर चर्चा करना –

"एको देवः सर्व भूतेषु गूढ़ सर्वव्यापी सर्व भूतान्तरात्मा"
"ईश्वर अंश जीव अविनाशी"

कबीर मूर्ति पूजक नहीं थे फिर भी कबीर के मूर्ति की पूजा होती है, यह हिन्दू समाज है।

– लव जिहाद, विधवा स्त्रियों की व्यवस्था आदि विषय।

– बालिका शिक्षा व्यवस्था।

– नीचे वाले को ऊपर उठाने की प्रेरणा एवं ऊपर वाले को नीचे वाले की सहायता करना। इस भाव पर भी चर्चा करनी चाहिए।

– समाज परिवर्तन के उदाहरण देना ताकि स्थानीय लोंग भी प्रेरित हो सके।

– सेवा कार्यो का भी उल्लेख करना चाहिए ताकि स्थानीय लोगों में सेवा भाव का जागरण हो सके।

बैठक के बाद –

– बैठक समाप्ति पर सामूहिक भोज, अल्पाहार आदि की व्यवस्था करनी चाहिए।

– जो बन्धु बैठक में नहीं आ पाये उनसे मिलकर बैठक में कार्यवाही की जानकारी देनी चाहिए।

– अगली बैठक से पूर्व सूची के सभी बन्धुओं से घर जाकर व्यक्तिगत मिलना और पहले बैठक में हुयी कार्यवाही पर भी चर्चा करना। कोई बात पर कार्यवाही आदि करने की योजना बनी हो तो अनुवर्तन की जानकारी प्राप्त करना।

– बैठक की प्रमुख बातों/कार्यवाही को रजिस्ट्रर में लिखना।

– प्रमुख कार्यकर्त्ता बैठकर समीक्षा करना।

– क्या–क्या न्यूनता रही इसकी चर्चा करना एवं पुनरावृति न हो और क्या और कैसे और अच्छा हो सकता है इसकी समीक्षा करना।

सामाजिक सद्भाव बैठकों की मर्यादा –

सामाजिक सद्भाव बैठक निरन्तर चलती रहे, जाति प्रमुखों/समाजों में कटुता न बढ़े, बैठकों का वातावरण उत्तम रहे। निरन्तर संवाद की स्थिति बनी रहे। इस हेतु कुछ मर्यादाओं का पालन करना ठीक रहता है।

- विवादों को टालना, संवादों को बनाना, ऐसी परिस्थितियों को सम्भालने की कुशलता चाहिए।
- किसी बात की सहमति बन जाये तो अति उत्तम, परन्तु यदि सहमति न बने तो हमें अप्रसन्न होने की आवश्यता नहीं।
- सामाजिक सद्भाव बैठक कोई कार्यक्रम बनाने का मंच नहीं, मानसिकता बनाना अर्थात् मानसिक दूरियाँ कम हो।
- सामाजिक सद्भाव बैठक किसी बात पर निर्णय करने का केन्द्र नहीं है। यहाँ दिशा देने का कार्य होता है।
- प्रत्येक जाति/समूह की अपनी विशेषताएं है, अपनी–अपनी शैली है, उसमें अधिक नहीं जाना।
- सामाजिक सद्भाव बैठक साध्य नहीं है अनौपचारिक मिलने–जुलने का साधन (स्थान) है। अनौपचारिक मिलना–जुलना जारी रहे, यह ज्यादा महत्वपूर्ण है। व्यक्तिगत मिलने–जुलने से कई बातें, कई सुझाव मिलते है।
- कभी–कभी अनौपचारिक कार्यक्रम भी होने चाहिए।
- परस्पर सहयोग के अवसर का लाभ लेना चाहिए, परन्तु यह कार्यक्रम सफल करने का स्थान/कार्य नहीं है।
- समस्या समाधान हेतु भी सामाजिक सद्भाव बैठक नहीं क्योंकि यह निर्णय का, योजना बनाने का स्थान नहीं। समस्या समाधान सामाजिक सज्जन नेतृत्व मिलकर करेंगे। बैठक में समस्या पर चर्चा व समाधान के तरीके पर चर्चा हो सकती है।
- मंच पर अथवा अन्य स्थान पर लगे पर्दे/पोस्टर पर "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ" का नाम न हो।
- सामाजिक सद्भाव बैठक के माध्यम से लोगों को अपना बनाना है अपने

जैसा नहीं बनाना है। अपना बनाने के बाद अपने जैसा बनता है, यह अलग बात है।

- सामाजिक सद्भाव बैठक कोई संघ की शक्ति बढ़ाने हेतु भी नहीं है, हिन्दू समाज की शक्ति बढ़े इस हेतु है। हिन्दू समाज की शक्ति का दर्शन हो।
- किसी जाति के कार्यक्रम में यथा सम्भव उसी जाति का कार्यकर्ता चर्चा/उद्बोधन हेतु नहीं भेजना चाहिए।
- जहॉ जाति भावना अधिक नहीं है वहां "जाति" शब्द का उल्लेख नहीं करना चाहिए। समाज, पंथ, सम्प्रदाय, वर्ग आदि शब्द का प्रयोग किया जा सकता है।
- सामाजिक सद्भाव बैठक का कार्य समझदारी का कार्य है, जल्दी करने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु धीरे–धीरे गति बढ़ाने की आवश्यकता है

सामाजिक सद्भाव बैठक का मूल्यांकन व परिणाम –

सामाजिक सद्भाव बैठकों के कारण समाज में क्या परिवर्तन हो रहे है, इनके क्या परिणाम प्राप्त हो रहे है, इसका मूल्यांकन का क्या आधार हो सकता है। इन बातों पर विचार पर करते है तो ध्यान में आता है कि निम्नांकित बातें होती है तो कह सकते है कि बैठकों के कारण समाज में परिवर्तन होना आरम्भ हुआ है। जैसे –

- जाति प्रमुखों के माध्यम से गतिविधियों के प्रयोग कितने समाज व्यापी हो रहे है।
- महापुरूषों की जयन्ति उत्सव सब वर्गो के बन्धु कितनी मात्रा में भाग लेते है।
- हिन्दु हितों के विरोध में होने वाले सामूहिक विरोध में सभी वर्गो के लोग भाग लेते है या नहीं।
- सद्भाव बैठकों के विषय जाति प्रमुखों द्वारा जाति के मंचों पर भी जाने चाहिए, इसकी पूछताछ करते रहना चाहिए।
- बैठकों में माता–बहिनों की सहभागिता कितनी मात्रा में बढ़ी है।
- एक समाज के धार्मिक आयोजनों में दूसरे समाज के लोगों को निमंत्रण

आदि देते है अथवा नहीं। धार्मिक आयोजनों से बढ़कर सामाजिक आयोजनों तक किस मात्रा में बढ़ता है।

- सामाजिक / समूहों में हमारे विषयों की चर्चा आरम्भ हुयी क्या?
- अन्य जातियों के कार्यक्रमों में हमारा व्यक्तिशः अथवा समूहशः सहजता से आना–जाना प्रारम्भ हुआ क्या?
- विभिन्न जातियों के कार्यक्रमों में हमारे कार्यकर्ताओं को चर्चा/उद्‌बोधन हेतु बुलाते है क्या?
- सभी महापुरूषों के प्रति समान भाव का निर्माण हो रहा है क्या?
- अपने कार्यकर्ता का सहज रूप से विशेष अवसरों पर गुरूद्वारा, जैन मन्दिर, बौद्ध विहार आदि में जाने का स्वभाव बना है क्या ?
- बैठकों में उपस्थिति व निरन्तरता किस मात्रा में बढ़ती है।
- बैठकों में आने वाले लोगों में से कितने लोग इस कार्य हेतु आगे आए अथवा कार्यकर्ता बने।
- विभिन्न समाजों के सज्जन शक्ति के नेतृत्व में परस्पर पूरकता किस मात्रा में बढ़ती है।
- बाहर का कार्य (संघ कार्य के अतिरिक्त समाज का कार्य) करने पर हम पर प्रभाव न पड़े, परन्तु हमारा प्रभाव बाहर (समाज में) कितना बढ़ा है।
- संघ का कार्य यह नहीं परन्तु इस कार्य से कितने लोग हमसे जुड़े यह हमारे कार्य का मूल्यांकन है।

कुल मिलाकर हमारे प्रयासों से समाज में समरसता सद्‌भाव उत्तरोतर बढ़ रहा है जातिगत वैमनस्य आपस में कम हो रहा है और व्यक्तिगत जाति चैतन्य के साथ हिन्दुत्व भाव प्रबल हो रहा है कि नहीं इसका सतत् मूल्यांकन–समीक्षा एवं उसके अनुरूप प्रयास अनुवर्तन चलता रहे।

जय श्री राम